कक्षा प्रबंधन

परिचय

इस लेख में, हम लोग आंगनवाड़ी केंद्र (AWC) के तीन आयु-समूहों 3-4, 4-5 और 5-6 वर्ष की आयु के बच्चों को दी जा रही प्री-स्कूल शिक्षा (PSE) के प्रभावी कक्षा प्रबंधन की रणनीतियों को समझेंगे । कक्षा प्रबंधन से तात्पर्य उन रणनीतियों को संगठित करने से है जिनका उपयोग बच्चों के अनुकूल शिक्षण वातावरण सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है । एक प्रभावी कक्षा प्रबंधन की रणनीतियों को प्रत्येक बच्चे की विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए, साथ ही उन्हें उनकी आयु-उपयुक्त विकासात्मक उपलब्धियां को प्राप्त करने की दिशा में बढ़ाने में सहयोग करना चाहिए। कक्षा प्रबंधन रणनीतियाँ संसाधनों और समय के व्यावहारिक और उपयोगी आवंटन/विभाजन को सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन की जानी चाहिए।

कक्षा प्रबंधन के लिए प्रभावी रणनीतियाँ

कक्षा के संसाधनों का सर्वोत्तम प्रबंधन: आंगनवाड़ी केंद्र का कक्षा लेआउट ऐसा होना चाहिए कि यह दैनिक दिनचर्या के सत्रों के बीच सुविधाजनक गमन को सुनिश्चित करे व बड़े समूह और छोटे समूह की गतिविधियों को सक्षम (इनेबल) करे।

शिक्षण कोनों की व्यवस्था: केंद्र के कक्षा-कक्ष में लेबल किये हुए सीखने के कोने बच्चों को कक्ष की संरचना को समझने और उनकी रुचि के सीखने के कोने में प्रतिभाग करने के लिए उनका मार्गदर्शन करते हैं जो कक्षा में उनका सुविधाजनक गमन और गतिविधियों में प्रतिभागिता को बढाता है । इसलिए, सीखने के कोनों को स्पष्ट रूप से लेबल किया जाना चाहिए और एक दूसरे से पर्याप्त दूरी पर व्यवस्थित किया जाना चाहिए। इससे बच्चों को स्वतंत्र खेल के समय ध्यान केंद्रित करके सीखने में सुविधा होगी, बच्चों को व्यक्तिगत रूप से सीखने के अनुभव के लिए जगह मिलेगी, भीड़भाड़ से बचा जा सकेगा, बच्चों के बीच आपसी झगड़ों को कम किया जा सकेगा और छोटे समूह की गतिविधियों को सक्षम किया जा सकेगा ।

खेल सामग्री और शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) का प्रबंधन/रख-रखाव : प्रत्येक सीखने के कोने में पहले से ही शालापूर्व शिक्षा प्रासंगिक और नॉन-टोक्सिक सामग्रियाँ, जैसे कि कला और शिल्प कोने में रंग, कागज, पेंट, मिट्टी आदि, ब्लॉक कोने में ब्लॉक और पहेलियाँ, नाटक कोने में मुखौटे और प्रीटेंण्ड प्ले सेट और किताबों के कोने में स्लेट और चाक के साथ-साथ आयु उपयुक्त कहानी की किताबें रखनी चाहिए । कंकड़, मोती, फूल, पत्ते आदि जैसी छोटी सामग्री को लेबल वाले कंटेनरों में ठीक से रखना चाहिए ताकि बच्चों को उनकी ज़रूरत की चीज़ें आसानी से मिल सकें। बच्चों के लिए सभी अनुकूल सामग्री आसानी से उपलब्ध होनी चाहिए। आंगनवाड़ी कार्यकत्री टीएलएम रोटेशन का अभ्यास कर सकती हैं, जिससे खेल के दौरान निरंतर ध्यान को बढ़ावा मिलेगा और बोरियत कम होगी। इसके लिए, कुछ चयनित टीएलएम को बच्चों के खेलने के लिए बाहर रखा जाता है, जबकि अन्य टीएलएम को अलमारी में ही रखे रहने दिया जाता है। थोड़ी देर बाद, बच्चों को दिए गए टीएलएम को अलमारी में रखे हुए टीएलएम के साथ बदला जा सकता है।

बच्चों के अनुकूल फर्नीचर (चाइल्ड फ्रेंडली) की व्यवस्था: केंद्र के भीतर के स्थान को व्यवस्थित करने में विभिन्न प्रकार की समूह गतिविधियों और उनके लिए कौन सी जगह सबसे उपयुक्त है , ये

सोचना शामिल है। प्रथम चक्र के समय बड़े समूह की गतिविधि के लिए आंगनवाड़ी कार्यकत्री को केंद्र में चटाई का उपयोग करना सबसे अधिक उपयुक्त लग सकता है। इसके अलावा,प्री स्कूल शिक्षा मुख्यतः अनौपचारिक, खेल आधारित गतिविधियों के माध्यम से दी जाती है, जिसके लिए आंगनवाड़ी केंद्र के आसपास घूमना पड़ता है। इसलिए, बच्चों के अनुकूल फर्नीचर, जैसे कम ऊंचाई वाली मेज और कुर्सियां, विशेष उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल की जा सकती हैं और उन्हें उसी के अनुसार व्यवस्थित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, बच्चों के अनुकूल फर्नीचर को पुस्तक कोने में और/या कला और शिल्प कोने में रखा जा सकता है, और उन्हें तब उपयोग के लिए व्यवस्थित किया जा सकता है जब बच्चे स्वतंत्र रूप से गतिविधि पुस्तकों के साथ संलग्न होते हैं।

केंद्र की दैनिक दिनचर्या की संरचना को व्यवस्थित करना : अध्ययनों से पता चला है कि प्रीडिकटीबिलिटी यानि पहले से अनुमान लगा पाना ; बच्चों को भावनात्मक रूप से सुरक्षित महसूस करने में मदद करती है तथा कक्षा में गतिविधियों में ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाती है।

दैनिक दिनचर्या में निरंतरता: पहल पुस्तिका एक संतुलित दैनिक दिनचर्या के साथ-साथ प्रत्येक विकासात्मक क्षेत्र के लिए निर्धारित समय, बड़े समूह की गतिविधियाँ , आयु अनुसार बच्चों का समूहीकरण और उनकी व्यक्तिगत गतिविधियों के लिए स्थान प्रदान करती है। नियमित दैनिक दिनचर्या बच्चों में सुरक्षा और संरचना की समझ को विकसित करती है, जिससे वे एक सत्र से दूसरे सत्र के बीच स्वयं को सहज कर पाते हैं। दैनिक दिनचर्या के सत्रों के बीच एक व्यवस्थित प्रवाह बच्चों को आगामी गतिविधियों के लिए तैयार करता है और गतिविधिओं के प्रति उनकी भावनात्मक प्रतिक्रिया को भी नियंत्रित करता है। जिससे अगले सत्र के लिए बच्चों को एकत्रित करने में समय भी कम लगेगा।

दैनिक दिनचर्या के दृश्य चित्रण को देखने की सुविधा : आंगनवाड़ी केन्द्र में दैनिक दिनचर्या के विभिन्न सत्रों का दृश्य चित्रण बच्चों को आगामी सत्रों की गतिविधियों की प्रकृति की कल्पना करने की सुविधा देता है।

सत्रों के बीच गमन (ट्रांजीशन) के तरीके : बच्चों को गतिविधिओं के लिए एक सत्र से दूसरे सत्र में ले जाने के अलग-अलग विधिओं को अपनाकर उनके गमन को अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, PSE किट में दी गई डफली को बजाना सत्र में बदलाव का संकेत देने के लिए किया जा सकता है। इसी तरह, अगले सत्र से सम्बंधित दृश्य संकेतों का इस्तेमाल भी बच्चों को अगले सत्र के बारे में संकेत देने में मददगार होता है।

एक सुरक्षित एवं प्रेरक सामाजिक-भावनात्मक वातावरण का निर्माण :आंगनवाड़ी केन्द्र में समावेशी और संवेदनशील सामाजिक-भावनात्मक वातावरण प्रभावी कक्षा प्रबंधन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है

बच्चों का स्वागत: दिन की शुरुआत में बच्चों का स्वागत सकारात्मक और रचनात्मक तरीके से करना, जैसे कि स्वागत चार्ट या स्वागत गीत, उनमें सीखने के प्रति उत्सुकता और इच्छा उत्पन्न करेगा। इससे बच्चों में बेचैनी और आशंका की भावना कम होगी, जिससे उनकी एकाग्रता बढ़ेगी और आंगनवाड़ी कार्यकत्री के साथ सक्रिय सहभागिता संभव होगी।

भावना चार्ट: भावना चार्ट या कार्ड का उपयोग करने की आदत डालने से बच्चों को अपनी भावनाओं को बिना किसी संकोच के प्रदर्शित करना सीखने में मदद मिलेगी। यह बच्चों को अत्यधिक खुशी और क्रोध की तीव्र भावनाओं को नियंत्रित करने में मदद करता है।

नियम स्थापित करना: पहल पुस्तिका में दी गई दैनिक दिनचर्या के 'प्रथम चक्र का समय' में दैनिक दिनचर्या की कुछ गतिविधियों की रूपरेखा दी गई है, जिसमें "नियमों को पढ़ना" भी शामिल है। यह गतिविधि आंगनवाड़ी केंद्र में कुछ व्यवहार संबंधी अपेक्षाएँ और आदतें स्थापित करने में मदद करती है। इन नियमों को रोज़ाना दोहराने से बच्चों में सकारात्मक आदतें और व्यवहार के पैटर्न विकसित होते हैं।

सकारात्मक सुदृढीकरण/मजबूती (रीइनफ़ोर्समेंट) का उपयोग: सराहना और पुरस्कृत करने जैसी सकारात्मक मजबूती बच्चों को उनकी गतिविधियों पर अधिक ध्यान देने के लिए प्रेरित करती हैं तथा सीखने की उनकी इच्छा को बढ़ाती हैं। पुरस्कृत करने के तरीकों में खेलने का अतिरिक्त समय देना या बाहर खेलने का समय देना, या बच्चे को अपनी पसंद की कोई गतिविधि या कहानी की किताब चुनने की अनुमति देना आदि शामिल हो सकते हैं।

स्वाभाविक रूप से सीखने के सुअवसर : किसी बच्चे द्वारा प्रदर्शित सकारात्मक व्यवहार को पहचानना जैसे बच्चे द्वारा खिलौना साझा करना या किसी सहपाठी की मदद करना और इस घटना को अन्य सभी बच्चों के साथ साझा करना , न केवल उस बच्चे के अच्छे व्यवहार को सुदृढ़ करता है, बल्कि पूरी कक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए एक उत्साहवर्धक सीखने काअनुभव भी बनाता है।

पुन:निर्देश देने की विधियों को अपनाना: गतिविधि के दौरान अचानक किसी तरह की रुकावट आ जाने की स्थिति में, बच्चों का ध्यान गतिविधि की ओर फिर से केन्द्रित करने के लिए फिर से सरल निर्देश देने की विधियों का उपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए ताली बजाने का पैटर्न बच्चों का ध्यान गतिविधि की ओर फिर से आकर्षित करने में सहायक होता है जो बिना किसी निर्देश के तरीके की तरह उपयोग किया जा सकता है । इसी तरह, बच्चों के साथ धीमी आवाज़ में बात करने से बच्चों को बातचीत करते समय अपनी आवाज़ की ध्वनि को कम करने की समझ विकसित हो सकती है। रचनात्मक तरीके जैसे कि किसी ऐसे चरित्र को अपनाना जो केवल कक्षा में व्यवधान उत्पन्न करता है, या मुखौटे, वेश-भूषा या कठपुतलियों का उपयोग करना भी बच्चों का ध्यान फिर से केन्द्रित करने में मददगार साबित हो सकता है।

आँगनवाड़ी केंद्र के कक्षा प्रबंधन में आँगनवाड़ी कार्यकत्री और आँगनवाड़ी सहायिका की भूमिका

आँगनवाड़ी कार्यकत्री :

- *अगले दिन के लिए तैयार रहें!!*
- बच्चों के आने से पहले आंगनवाड़ी केंद्र में खिलौनों और अन्य प्रासंगिक खेल सामग्री से सीखने के कोने स्थापित करें।
- आसानी और जल्दी से पहचानने के लिए सभी सीखने के कोनों, बच्चों के पोर्टफोलियो और खेल सामग्री वाले कंटेनरों पर उनका नाम लिखें।
- निर्देशित गतिविधियों के लिए वार्षिक कैलेंडर में सुझाए गए प्रासंगिक टीएलएम की उपलब्धता सुनिश्चित करें।
- *बच्चों के आने से पहले आंगनवाड़ी केन्द्र पर उपस्थित रहें!!*
- बच्चों के आने पर उनका स्वागत करें और उन्हें उनके नाम से संबोधित करें।
- उनसे सरल प्रश्न पूछें जैसे 'आज आप कैसे हैं', 'आज आपको केंद्र में कौन लाया है', 'आज केंद्र में आकर आपको कैसा लग रहा है'।
- *पहल और वार्षिक गतिविधि कैलेंडर में दी गई दैनिक दिनचर्या का पालन करें !!*
- दैनिक दिनचर्या में सत्रों के क्रम को बनाए रखने का प्रयास करें, "प्रथम चक्र से गतिविधियों" को शुरू करें।
- विशेष सत्रों हेतु आयु अनुसार समूह बनाने के लिए के लिए कैलेंडर का पालन करना सुनिश्चित करें।
- केंद्र के लिए सरल नियम बनाए !!
- नियम सरल और समझने में आसान होने चाहिए। जैसे खिलौनों को वहीं रखें जहाँ से आपने उन्हें लिया था।
- इन नियमों को बनाने में बच्चों को शामिल करें। बच्चों को अलग-अलग तरीकों से इन नियमों की याद दिलाएँ।

आँगनवाड़ी सहायिका :

- आंगनवाड़ी कार्यकत्री की अनुपस्थिति में, बच्चों के आने से पहले आंगनवाड़ी केंद्र में उपस्थिति सुनिश्चित करें।
- आंगनवाड़ी केंद्र में सीखने के कोने स्थापित करने, नाम लिखने और बच्चों के अनुकूल फर्नीचर की व्यवस्था करने में आंगनवाड़ी कार्यकत्री की मदद करें।
- आंगनवाड़ी कार्यकत्री को शिक्षण सामग्री बनाने और एकत्रित करने में सहायता करें।
- • सीखने के कोनों में खेलने के दौरान बिना बाधा डाले बच्चों की निगरानी करें ।
- • बच्चों के बीच केवल तभी हस्तक्षेप करें जब उनके बीच तनाव बढ़ रहा हो जिससे वे एक-दूसरे को चोट पहुँचा सकते हों ।

सुरक्षित स्थान बनाएं!!

प्रभावी कक्षा प्रबंधन के लिए सजग अभ्यास (Mindful practices)

- **सीखने के कोनों में खेल सामग्री की विवेकशील व्यवस्था** –किसी तरह की दुर्घटना को रोकने और क्षति से बचने के लिए, सीखने के कोनों में सावधानीपूर्वक खेल सामग्री रखी जा सकती है। उदाहरण के लिए, किताब के कोने में कहानी की किताबों के साथ क्रेयॉन या पेंट रखने से बचें। इसके जगह ,कहानी की किताबों के साथ स्लेट और चाक रखें ताकि बच्चे किताबों से रचनात्मकता सीख सकें, साथ ही किताबों में रंगों से चित्र बनाने या लिखने से भी बचाव हो सके ।इसी तरह, गोंद, तेज कैंची जैसी सामग्री का उपयोग छोटे बच्चों द्वारा केवल आंगनवाड़ी कार्यकत्री या सहायिका की देखरेख में ही किया जाना चाहिए | इसलिए, इन्हें स्वतंत्र खेल के समय में सीखने के कोनों में नहीं रखना चाहिए।

- **दैनिक दिनचर्या में लचीलापन -** दिनचर्या में लचीलापन - हालांकि आंगनवाड़ी केंद्र में एक नियमित दिनचर्या की संरचना बनाए रखना महत्वपूर्ण है, फिर भी , बच्चों की मनोदशा के अनुसार कभी-कभी गतिविधियों का चयन व आयोजिन किया जा सकता है। यदि कक्षा में किसी तरह का व्यवधान उत्पन्न हो रहा हो, तो बच्चों को उस दिन की अपनी रुचि की गतिविधि बताने दें।

- **कक्षा प्रबंधन में समुदाय की भागीदारी –**यदि बच्चों की संख्या इतनी अधिक है कि उन्हें केवल दो समूहों में विभाजित नहीं किया जा सकता, तो उन्हें छोटे-छोटे समूहों में विभाजित करें। बच्चों के समूह को व्यस्त रखने में माताओं या किशोरियों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें।

- **बच्चों को अपनी ज़रूरतों को व्यक्त करने के लिए एक सुरक्षित स्थान बनाएं –** कक्षा में एक ऐसा सक्षम वातावरण बनाएं जहाँ बच्चे बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी बात कहने में स्वतंत्र और सहज महसूस करें । गतिविधियों के दौरान मौखिक व्यवधान को कम करने के लिए बुनियादी जरूरतों जैसे "मुझे पानी चाहिए" या "मुझे बाथरूम जाना है" के लिए दृश्य संकेतों के उपयोग को शुरू करें और उसे प्रोत्साहित करें।

- **निर्देशों के लिए सकारात्मक वाक्यों का प्रयोग करें –**"भागो मत" या "चिल्लाओ मत" जैसे नकारात्मक वाक्यों के प्रयोग से बचें। इसके स्थान पर "धीरे-धीरे चलो" या "धीरे बोलो" जैसे सकारात्मक वाक्यों का प्रयोग करें। कक्षा-कक्ष में भी इसी प्रकार का व्यवहार अपनाकर उदाहरण प्रस्तुत करें।